metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
brought to you by CORE
provided by CMFRI Digital Repository

गोआ तट पर कोष संपाश मात्स्यिकी का आर्थिक मूल्यांकन

कोष संपाश का प्रचालन सबसे पहले एक परीक्षणात्मक दृष्टि से गोआ में वर्ष 1957 में किया था। केवल दो कोष संपाशों से 1964 में प्रचालन की अच्छी फायदा हुई थी। 1969 होते होते कोष संपाशों की संख्या 42 हो गयी और अब गोआ तट में लगभग 225 कोष संपाशों का प्रचालन होता है।

गोआ से 1992 में प्राप्त कुल समुद्री मछली 76 हज़ार टन है जिसका 70% कोष संपाशों का योगदान था। इस राज्य से समुद्री मत्स्यन की परंपरागत रीति प्रायः अप्रत्यक्ष हुई है। यहाँ के कुल मछली पकड का लगभग 96% कोष संपाषों और ट्रालरों के यंत्रीकृत मत्स्यन के ज़रिए होता है। पकड का 3% देशी आनायकों से और 1% अयंत्रीकृत परंपरागत रीति से प्राप्त होती है। अतः समुद्री मत्स्यन आजकल पूंजी निवेश से जुडा हो जा रहा है। कोई भी अन्य उत्पादन कार्य के समान मत्स्य का भी उत्पादन लागत होता है और यंत्रीकरण की वृद्धि के अनुसार प्रयास का एकक लागत भी लगातार बढती जाती है। इस प्रकार बढती जानेवाली मत्स्यन लागत उच्च मूल्य या अच्छी पकड से क्षतिपूर्ति करती है या नहीं, यह जानने केलिए एक आर्थिक मूल्यांकन की आवश्यकता है।

गोआ तट पर कोष संपाश मात्स्यिकी का आधार इतना ऊँचा है कि, सी एम एफ आर आइ ने गोआ तट पर कोष संपाशों की आर्थिक निष्पादन पर एक अध्ययन चलाया।

रिपोर्टर

के.के.पी. पणिक्कर, डी.बी.एस. सेहरा और ए. कनक्कन

सी एम एफ आर आइ, कोची, केरल

कोश संपाश के ज़रिए अवतरण का दृश्य

सामग्री और रीतियाँ

सी एम एफ आर आइ द्वारा 1991 और 1992 में चलाये गए विशेष सर्वेक्षण से कोष संपाशों के आर्थिक और सामाजिक व आर्थिक पहलुओं की डाटा का संग्रहण किया गया है। पकड एवं प्रयास की संबंधित डाटा सी एम एफ आर आइ डाटा केन्द्र से प्राप्त किया गया।

राज्य में कोष संपाश अवतरण का झुकाव

गोआ में समुद्री मत्स्य अवतरण 1990-92 के दौरान बढती हुई दिखाई। पकड 1980 में 24,500 और 1989 में हुई 12,0000 टन के बीच विविधता दिखाई। 1988-92 के दौरान औसत वार्षिक अवतरण 90,000 टन था। यह 1980-84 अवधि के अवतरण की तीन गुणी थी। 1989 में पश्चिम तट से तारली और बाँगडे की भारी पकड प्राप्त हुई थी। गोआ तट में हुई समुद्री मत्स्यन अवतरण की वृद्धि का मुख्य कारण कोष संपाशों की वृद्धि है। वर्ष 1980 में कोष संपाशों द्वारा कुल प्रयास प्रतिदिन 4,000 एकक आकलित किया था। वर्ष 1992

में यह प्रति दिन 36,000 एकक तक बढ गया।

प्रतिदिन प्रचालन से प्रतिदिन पकड 1980 में 1.5 टन था और वर्ष 1992 में 2 टन रिकार्ड की गयी। उच्च पकड 2.5 टन 1989 में रिकार्ड की गयी। कोष संपाश पकड के 95% से अधिक क्लूपिड्स, करैंजिड्स, बाँगडे और ट्यूना का योगदान है जिन्हें परंपरागत संभारों के ज़रिए पकडे जाते थे।

मत्स्यन लागत

एक कोष संपाश केलिए औसत निवेश लगभग 7.5 लाख रु. आकिलत किया गया था।

मत्स्यन लागत के विश्लेषण केलिए 1991 और 92 के दौरान किये गए व्यय का अलग आकलन किया गया और सारे लागतों को वार्षिक औसत प्रचालन व्यय और वार्षिक औसत नियत लागत नामक दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया।

प्रति एकक का वर्षिक औसत प्रचालन व्यय 5-6 लाख रु. अकलित किया गया जिसमें ईधन और मज़दूरी का व्यय मुख्य है। कोष सेपाशों का प्रचालन करनेवाले अन्य राज्यों के समान मछली अवतरण केलिए गोआ में वाहक पोतों का उपयोग नहीं करता है। गोआ में भुगतान माहिक है जबकि अन्य राज्यों में यह ईंधन व्यय और पकड के नीलाम व्यय को छोडकर बाकी राजस्व का कुछ प्रतिशत है।

ब्याज, मूल्यहास और बीमा नियत लागत आकलन में शामिल है। ब्याज की दर 18% में और मूल्यहास आनायक और इंजिन केलिए 10 साल, संभार केलिए 5 साल और अन्य सहायक उपकरणों केलिए एक साल के आधार पर है। कुल नियत लागत 2.68 लाख रु. आकलित किया गया। अतः एक कोष संपाश प्रचालन की वार्षिक नियत लागत 1991 केलिए 7.73 लाख रु. और 1992 केलिए 8.71 लाख रु. आकलित किया गया।

मत्स्यन आय

प्रति एकक का औसत वार्षिक पकड 1991 में 320 टन और 1992 में 360 टन और औसत वार्षिक राजस्व क्रमशः 8.5 लाख और 9.9 लाख रु. आकलित किया गया। 1991 के दौरान कुल लाभ प्रचालन लागत कम करके 3.4 लाख रु और निवल लाभ पूरी लागत कम करके 75 हज़ार रु आकलित किया गया। 1992 के दौरान कुल लाभ 3.9 लाख और निवल लाभ 1.2 लाख रु. था।

गोआ में लगभग 200 कोष संपाश पकड के ज़रिए कुल राजस्व 210 करोड रु. और कोष संपाशों पर कुल निवेश लगभग 150 करोड रु. आकलित किया गया है।

कोष संपाश अवतरण से प्राप्त 210 करोड रु. में 42 करोड रु ईंधन व्यय और शेष 168 विविध व्यक्तियों के वेतन के रूप में जाते है। अतः कुल आय का 80% राष्ट्रीय आय में लीन हो जाता है।

प्रतिट्रिप लागत और अर्जन

साधारणया गोआ में कोष संपाश मत्स्य केलिए प्रति दिन एक ही बार जाता है। प्रतिदिन औसत ईंधन लागत 1991 में 750 रु. और 1992 में 1,050 रु था। एक दिन का मज़दूरी बिल 1991 में 1,200 रु. और 1992 में 1,340 रु था।

प्रतिदिन प्रति एकक प्रचालन से प्राप्त पकड 1991 में 6 टन और 1992 में 1.8 टन था और कुल अर्जन क्रमशः 4,240 और 4,950 रु था। कर्नाटक और केरल के कोष संपाशों की तुलना में यह रकम कम है। यद्यपि गोआ में वार्षिक मत्स्यन दिवस की अधिकता होगी।

मौसमीयन

गोआ में कोष संपाश प्रचालन केलिए सितंबर-दिसंबर तक की अवधि और ट्रालिंग केलिए जनवरी-मई का समय सबसे उचित है।

प्रचालन का इष्टतम स्तर

वर्तमान इष्टतम स्तर के आधार पर 200 एकक 200 प्रचालन दिनों से और प्रति कि.ग्रा औसत 3 रु पर हर एकक को प्रति दिन प्रचालन से 1.5 टन मछली प्राप्त करनी है। अतः कुल कोष संपाश पकड लगभग 60,000 टन मछली होनी चाहिए। यदि पकड या मूल्य में वृद्धि है तो अर्थक्षमता को

प्रभावित किए बिना वर्तमान प्रचालन स्तर बढाया जा सकता है।

परंपरागत मात्स्यिकी पर कोष संपाश प्रचालन का प्रभाव

गोआ के परंपरागत संभार राम्पेनी, येन्डी (तट संपाश) और गिल जाल है। इन गिअरें के ज़रिए 1975 में 60% अवतरण हुआ था। लेकिन 1984 में यह कम होकर 10% हो गया। कोष संपाशों और ट्रालरों जैसे यंत्रीकृत एककों के ज़रिए 1992 में 96% अवतरण हुआ। कोष संपाशों की लगातार बढती से मछली की कुल पकड और मूल्य बढ गई और मात्स्यिकी से संबंधित कई कार्यकलापों की स्थापना हुई जिससे परंपरागत मात्स्यिकी करनेवालों को रोज़गार भी मिल गया। लेकिन कर्नाटक राज्य के समान यहाँ भी नया विकासों से शहरी लोगों का ही भलाई हुई है। यह भी नहीं, कोष संपाश अपनाने केलिए भारी निवेश की आवश्यकता पडती है। इसलिए ये लोग कोष संपाशों के मालिक बनने के बदले कोष संपाशों में मज़दूर बन जाते है। कर्नाटक में देशी यानों का छोटे कोष संपाशों की प्रस्तुति ने कोष संपाशों का प्रभाव कम किया है। गोआ में भी इसकी प्रस्तुति किया जाए तो गाँव पर आधारित मत्स्यन क्रियाकलापों का उद्धार हो सकता है।

वलय संपाश (ring seines)

वेलापवर्ती संपदाएं मूलतः वलय संपाश से पकडी जाती है। दक्षिण पश्चिम तट में विशेषकर केरल और मॉंग्लूर के समुद्र में वेलापवर्ती मछलियाँ को लक्षित करके इसका प्रचालन होता है।